

॥ श्री अम्बे माँ की आरती ॥

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।

तुमको निशदिन ध्यावत, मैया जी को सदा मनावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥

ॐ जय अम्बे गौरी ।

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को ।

उज्ज्वल से दोउ नैना, निर्मल से दोउ नैना, चन्द्रबदन नीको ॥

ॐ जय अम्बे गौरी ।

कनक समान कलेवर,,रक्ताम्बर राजै ।

रक्त पुष्प गलमाला, लाल कुसुम गलमाला, कण्ठन पर साजै ॥

ॐ जय अम्बे गौरी ।

केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्परधारी ।

सुर नर मुनिजन सेवत, सुर नर मुनिजन ध्यावत, तिनके दुखहारी ॥

ॐ जय अम्बे गौरी ।

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।

कोटिक चन्द्र दिवाकर, कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥

ॐ जय अम्बे गौरी ।

शुम्भ निशुम्भ विडारे, महिषासुर घाती ।

धूम्र विलोचन नैना, मधुर विलोचन नैना, निशदिन मदमाती ॥

ॐ जय अम्बे गौरी ।

चण्ड मुण्ड संघारे, शोणित बीज हरे ।

मधुकैटभ दोउ मारे, मधुकैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥

ॐ जय अम्बे गौरी ।  
ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ।  
आगम निगम बखानी, चारों वेद बखानी, तुम शिव पटरानी ॥  
ॐ जय अम्बे गौरी ।  
चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरू ।  
बाजत ताल मृदंगा, बाजत ढोल मृदंगा, अरु बाजत डमरू ॥  
ॐ जय अम्बे गौरी ।  
तुम हो जग की माता, तुम ही हो भर्ता ।  
भक्तन की दुख हरता, संतन की दुख हरता, सुख-सम्पत्ति करता ॥  
ॐ जय अम्बे गौरी ।  
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।  
मनवांछित फल पावत, मनइच्छा फल पावत, सेवत नर नारी ॥  
ॐ जय अम्बे गौरी ।  
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।  
श्री मालकेतु में राजत, धोळा गिरी पर राजत, कोटि रतन ज्योति ॥  
ॐ जय अम्बे गौरी ।  
श्री अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै, मैया प्रेम सहित गावें ।  
कहत शिवानन्द स्वामी, रटत हरिहर स्वामी, मनवांछित फल पावै ॥  
ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।  
तुमको निशदिन ध्यावत , मैया जी को सदा मनावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥  
ॐ जय अम्बे गौरी ।